पुस्तक परिचय

ताओ उपनिषद

भाग-5

इस पुस्तक को अपने हाथ में लें तो थोड़ा सम्हल जाना—या तो यह आपको नहीं छोड़ेगी या आप इसे नहीं छोड़ेंगे। ऐसा नहीं है कि इसे आपको प्रथम पृष्ठ से पढ़ना प्रारंभ करना है; आप कहीं से, किसी भी पृष्ठ से प्रारंभ कीजिए, आप पकड़े जाएंगे। ऐसी चुंबकीय है यह पुस्तक। पढ़ते जाओ—भीतर प्राण एक परम धन्यता की अनुभूति से भरते जाते हैं।

लाओत्से प्राचीन हैं, लेकिन उनसे अधिक नूतन व आधुनिक व्यक्ति ढूंढना कठिन है। बल्कि ऐसा कहें कि अभी उनका समय आने को है, जब लोग लाओत्से को समझने के योग्य हो पाएंगे।

ऐसा भी नहीं है कि लाओत्से का ताओ-दर्शन कोई गूढ़, कोई गंभीर रूखी-सूखी दार्शनिकता है जिसे समझना कठिन हो। नहीं, यह बिलकुल दुरूह नहीं है। यह एकदम सरल है, सूत्रात्मक और काव्यात्मक है। लेकिन सामान्यतः जैसा जीवन हम जीते हैं उसमें सब कुछ जटिल व दुरूह हो गया है। अन्यथा, ताओ को हम ऐसे समझ लेंगे जैसे कि हम इसे प्राकृतिक रूप में सदा से जानते हों, जैसे कि यह सदा से हमारे प्राणों में था ही।

लाओत्से के इन सहज सूत्रों पर ओशो के अमृत प्रवचनों को पढ़ते-पढ़ते ऐसी ही अनुभूति होती है।

इन सूत्रों में एक अनूठा काव्य है—जिसमें अप्रदूषित ग्राम्य जीवन की सोंधी माटी की सुगंध है। अगर आपको सही मायने में काव्य का रस लेना हो तो लाओत्से के ये सूत्र आपको उस रहस्यमय लोक में ले जाएंगे जहां आप केवल एक कवि के काव्य का ही नहीं, बल्कि एक ऋषि के नैसर्गिक काव्य-रस का आस्वाद लेंगे। और इसे जितनी बार पढ़ेंगे, पर्त-दर-पर्त उसके रहस्य आप आत्मसात करते जाएंगे। उदाहरण के लिए, ताओ के इस एक सूत्र को ही लें—

जो चरित्र का धनी है, वह शिशुवत होता है।

जहरीले कीड़े उसे दंश नहीं देते,

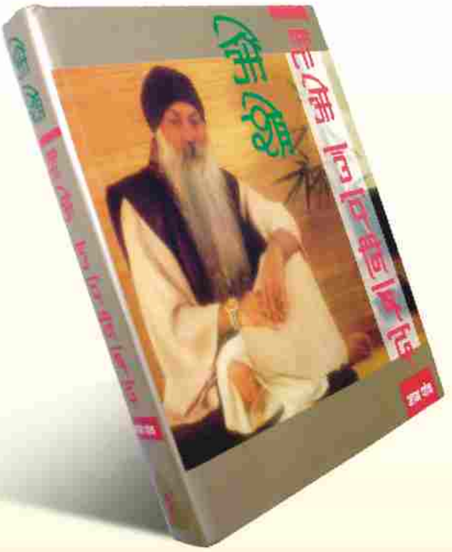

जंगली जानवर उस पर हमला नहीं करते,

और शिकारी परिन्दे उस पर झपट्टा नहीं मारते।

यद्यपि उसकी हड्डियां मुलायम हैं, उसकी नसें कोमल,

तो भी उसकी पकड़ मजबूत होती है।

यद्यपि वह नर और नारी के मिलन से अनभिज्ञ है,

तो भी उसके अंग-अंग पूरे हैं।

जिसका अर्थ हुआ कि उसका बल अक्षुण्ण है।

दिन भर चीखते रहने पर भी उसकी आवाज भर्राती नहीं है;

जिसका अर्थ हुआ कि उसकी स्वाभाविक लयबद्धता पूर्ण है।

लयबद्धता को जानना शाश्वत के साथ तथाता में होना है,

और शाश्वत को जानना विवेक कहलाता है;

लेकिन जीवन में संशोधन करना अशुभ लक्षण कहलाता है;

और मनोवेगों को मन की राह देना आक्रमण है।

क्योंकि चीजें अपने यौवन पर पहुंच कर बुढ़ाती हैं;

वह आक्रामक दावेदारी ताओ के खिलाफ है।

और जो ताओ के खिलाफ है वह युवापन में ही नष्ट होता है।

लाओत्से के इस सूत्र से आप क्या समझे? संभवतः इसे पुनः-पुनः पढ़ना होगा—ऐसे ही जैसे कोई काव्य-पाठ करता है। फिर आप ओशो के प्रवचन में प्रवेश करें, तो उसे पढ़ कर भी आपको यही अनुभूति होगी कि यह एक बार पढ़ कर रख देने वाली बात नहीं है; उसे फिर जितनी बार पढ़ेंगे उतनी ही बार आप अमृत का आस्वाद लेंगे। इस प्रवचनमाला के माध्यम से लाओत्से और ओशो हमारे समकालीन हैं, लेकिन वह क्षण निश्चित ही सौभाग्य का होगा जब हम भी उनके समकालीन हो जाएंगे। ये रहस्यमय काव्य-सूत्र उस आयाम में हमारे पाथेय हैं।

— स्वामी चैतन्य कीर्ति